IInd paper

4/8/16

4/8/16

UNIT = I

Meaning of Recreation → मनोरंजन लैटिन भाषा के शब्द Recreation का हिन्दी रूपान्तरण है। मनोरंजन शब्द मन और रंजन के यो से बना है इसका अर्थ है मन को आनन्दित करना या प्रसन्न करना है। वैसे ही रंजन शब्द का अर्थ रंगना है। इस अर्थ के साथ मन का रंगना मनोरंजन है। रंग आनन्द का प्रतिक है इसलिए इसका अर्थ साधु भी मन को आनन्दित करना मनोरंजन है।

Recreation → Recreation में दो शब्द हैं Re and Creation है। Re माने पुनः Creation माने सृष्टि अर्थात् Recreation के दो अर्थ है प्रथम पुनः सृष्टि माने जिससे मनुष्य का फिर से निर्माण हो जाये।

Deffination of Recreation → "ब्रुअर के अनुसार मनोरंजन मन बहलाने का एक ऐसा अनुभव है जिसके द्वारा व्यक्ति को शान्ति और प्रसन्नता की प्राप्ति होती है। शिक्षा की तरह मनोरंजन भी एक मौलिक आवश्यकता है जो अब दैनिक जीवन का अंग है।"

"जे. बी. नैश के अनुसार मनोरंजन की क्रिया कोई वस्तु नहीं है बल्कि उसका भावना से सम्बन्ध है या एक व्यक्ति सहनशीलता है कि मनोरंजन वैज्ञानिक प्राकृतिक द्वारा प्रतिक्रिया उत्पन्न करता है तथा या जीवन जीने के कला है।"

Rojgaaralert.com

Scanned by CamScanner

"सालसन के अनुसार मनोरंजन गति नहीं बल्कि यह संवेग है। यह एक व्यक्तिगत अनुक्रिया है, मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया है, यह जीवन का मार्ग है, जीवन के प्रति एक दृष्टिकोण है।"

05/8/16

Objective of recreation and advantage of recreation

(i) Direct Objective
(ii) Indirect Objective

(i) **Direct Objective** ⇒ Direct Objective का अभिप्राय ऐसे उद्देश्यों से है जो सबके सामने स्पष्ट है जो सबके अनुभव में आता है और जिसके सम्बन्ध में कोई विवाद खड़ा नहीं किया जा सकता है। मनोरंजन के प्रत्यक्ष के उद्देश्य है प्रथम आनन्द और दूसरा संतुष्टि पाना। तथा द्वितीय की [illegible] से [illegible] [illegible] पुनः [illegible] [illegible] अर्जित करना [illegible] दोनों [illegible] मनुष्य को आनन्दित करते है और कर्म की शक्ति भी प्रदान करते है। ये दोनों उद्देश्य अपने आप में पुनः सक्षम है इन्ही उद्देश्यो के कारण मनोरंजन की महिमा टीकी हुई है। इन्ही उद्देश्यो की चरितार्थी [illegible] प्राकृतिक और मानवीय प्रयास [illegible] है।

सारे मनोरंजन के प्रसाधान मुलरूप से इन्ही उद्देश्यो प्राप्ति के लिए निरमीत किये है।

Rojgaralert.com

08/08/16

(ii) Indirect Objective → मनोरंजन के परोक्ष उद्देश्य है इन्हे भी महत्वपूर्ण माना जाना चाहिए ये उद्देश्य मनोरंजन के ही उत्पादक है।

मनोरंजन मौन उद्देश्य आनन्द और शक्ति प्राप्त करने के पश्चात मनुष्य के बाह्य क्रियाकलापो मे नवीनता चारूता उपयोगिता और सक्रियता आ जाती है इन सब गुणो के आते ही मनोरंजन के वह आयामी उद्देश्य निश्प्रयास ही फलित होने लगते है। इन उद्देश्यो को हम कई शीर्षको को विभक्त कर समझ सकते है। जो निम्नलिखित है :—

(i) अवकाश के समय का सदउपयोग।
(ii) उपभोग शक्ति का विवर्धन।
(iii) व्यक्तित्व निमार्ण मे सहायक।
(iv) नई रूचियो का जनक।
(v) व्यवसाय के क्षेत्र सहयोग।
(vi) शिक्षण के साधन उपलब्ध करना।
(vii) मनोरंजन उपव्यवसाय के रूप में।
(viii) समाजिकता एवं बंधुत्व भावना का विकास।
(ix) नेत्रत्व अनुसाशन और चरित्र निमार्ण।

(i) अवकाश के समय का सदउपयोग → मनुष्य के दैनिक कार्य को सम्पन्न करने के पश्चात कुछ अवकाश मिलता है। यदि उसकी व्यवस्ता अधिक है तो भी वह जानबुझकर अवकाश के क्षण ले लेता है। अवकाश मे मनुष्य अपनी उप पीड़ा थकान को निकालता है अवकाश के क्षणो की रिक्तता के भरने के लिए मनोरंजन उपदान है। इस प्रकार मनोरंजन अवकाश के क्षणो का उपयोग माध्यम

Scanned by CamScanner

4

11/08/16

(ii) उपभोग शक्ति का विवर्धन ⇒ मनोरंजन क्रिया शक्ति को ही नहीं विकसित करता वरण उपभोग शक्ति को भी बढ़ता है। मनोरंजन के सहयोग से उपभोग की सारी प्रक्रिया तीव्र सुख प्रदान करती है।

(iii) व्यक्तित्व निमार्ण मे सहायक ⇒ मनोरंजन व्यसन के स्तर पर पहुँचकर मनुष्य में समान्य से अधिक दक्षता प्राप्त करने हेतु बन जाता है। मनोरंजन मनुष्य के किसी कौशल मे प्रवीण हो जान पर मनुष्य का व्यक्तित्व बिखर जाता है। मनोरंजन व्यक्ति को व्यक्तित्व प्रदान कर उसे जीवन सफलता दिलाने मे सहयोग करता है।

10/08/16

(iv) नई रुचियो का जनक ⇒ दैनिक व्यवस्ता के कारणो मनुष्य की चेतिना परि-भ्रमीत रहती है। इस यंत्री घेरे से चेतना का निकालने के लिए मनोरंजन परमपरोगी सिद्ध होता है। मनोरंजन के सहचराय से उसकी रुचिया आनन्द के नये आयामो के अविस्कार सरलभ हो जाती है। मनोरंजन व्यक्ति को ही नही पूरे समाज को नई रुचियो के क्षेत्र मे पहचाने मे उत्प्रेरक का कार्य करता है।

(v) व्यवसाय के क्षेत्र मे सहयोग ⇒ मनोरंजन की उपयोगिता वाही दृष्टि से अपनाने पर उसे व्यवसाय क्षेत्र मे विकास होता है। मनोरंजन किसी कौशल को व्यक्ति स्तर पर व्यसाय बनाकर ज्यादा धन अर्जित कर सकता है। आज मनोरंजन कौशल का सर्वाधिक मुल्य है।

Rojgaralert.com

Scanned by CamScanner

11/08/16

(vi) **शिक्षण के साधन उपलब्ध करना** ⇒ मनोरंजन के बल पर बहुत सी शिक्षण संस्थाये खुली है इन संस्थाओ में बहुत से कर्मचारी कार्यरत है जिन्हे समान्य और धन दोनो की प्राप्ति हो रही है।

मनोरंजन के उद्देश्य

- शारीरिक स्वास्थ्य
- स्वास्थ्य के विकास के उद्देश्य
  - मानसिक स्वास्थ्य
- सामाजिक विकास का उद्देश्य
  - प्रभावशाली समायोजन
  - प्रजातांत्रिक विचारधारा
  - नियम कानून का पालन
- अवकाश के समय का सदुपयोग
  - कला
  - अच्छी आदत
  - सामाजिक सेवाएँ

- भौतिक आवश्यकताएं
- सामाजिक आवश्यकताएं
- मानसिक आवश्यकताएं

Rojgaaralert.com

Scanned by CamScanner

13/08/16

(vii) **मनोरंजन उपव्यवसाय के रूप में** ⇒ मनोरंजन किसी कौशल मे व्यस्त हो जाने पर आदमी एक साथ दोनो हाथो से खा सकता है वह जिस व्यवसाय मे लगा है उससे तो वह लाभ पाता ही है बचे हुए समय को व्यवसाय मे ढाल कर अतिरिक्त धन प्राप्त कर सकता है।

(viii) **समाजिकता एंव बंधुत्व भावना का विकास** ⇒ सामूहिक स्तर पर आयोजित मनोरंजन कार्यक्रम मे बहुत से भाग लेते है इस प्रकार का मनोरंजन परिचय के क्षेत्र का यह बन्धुत्व के क्षेत्र को विकसित करता है परस्पर मिलने-जुलने से बंधुत्व भावना का विकास होता है। मनोरंजन प्रस्तुत करने वाले एक साथ रहते-रहते एक परिवार का रूप धारण कर लेते है। एक विशिष्ट कलाकार समुह को आकर्षित करके एक विशेष सामूहिकता को जन्म दे सकता है।

(ix) **नेत्रत्व अनुसासन और चरित्र निमार्ण** ⇒ विभिन्न संगठनो के संचालनो के लिए एक नेता की आवश्यकता होती है। जो वह संगठनो का नेत्रित्व करता है। इस प्रकार कि संगठन मे नैत्रित्व की भावना पैदा करता है अनुसाशन की भावना जन्म मनोरंजन संस्थायो मे एक साथ कार्य करते-करते आ जाता है। इस प्रकार मनोरंजन प्रदान करने वाले संस्थाये चरित्र का भी विकास करती है। क्योंकि चारित्रक कमी होने के कारण वह मनोरंजन की कसौटी पर खड़ा नही उतर सकता है। इस प्रकार मनोरंजन मे एकरूपता, रसता एंव तारमेहता से मनुष्य मे नैत्रित्व, अनुसासन एंव चरित्र का विकास होता है।

Rojgaaralert.com

Scanned by CamScanner

03/08/16

Recreation

R → Readiness → तत्परता
E → Entertainment → मन बहलाना
C → Charming → उत्साहवर्धक
R → Relaxtation → आरामदायक
E → Expriantion → अनुभव
A → Attractive → आकर्षक
T → Tendency → प्रवृति
I → Inhereant → स्वाभाविक
O → OFtime → खाली समय
N → Natural → प्राकृतिक

Teacher

T → Talented
E → Excellent
A → Adorable
C → Charming
H → Humble
E → Encouraging
R → Responsible

Rojgaaralert.com
Scanned by CamScanner

22/8/16

Historical development of recreation - India

प्राचीन भारत में मनोरंजन का विकास ⇒

(i) **पूर्व वैदिक एवम वैदिक काल ⇒ शारीरिक शिक्षा में मनोरंजन का उल्लेख**

विशेष रूप से प्राचीन भारतीय साहित्य में कहीं नहीं पाया जाता है। धार्मिक शास्त्रों, चित्रों एवं शिल्पकारी से उस समय की शारीरिक शिक्षा मे मनोरंजन का अनुमान लगाया जाता है। वेदो के श्लोक से अनुमान लगाया जा सकता है। कुछ श्लोक देवताओं के लिए लिखे गये थे। जिसमे शरीर का वर्णन है इसमे दो प्रकार की रितीयों का विशेष ज्ञान होता है। आसन जिसका अभिप्राय अध्यात्मिक की उन्नति था। तथा मलयुद्ध या धनुर्विद्या जिसका उद्देश्य वीरो तथा योद्धाओ की तैयारी का था। कुछ जगह पर इसका उपयोग मनोरंजन के रूप मे उपयोग करते हुए दिखाया गया है। अखाड़े की प्रथा भी भारत वर्ष मे प्राचीन है। वैदिक काल की शारीरिक शक्ति एवं मनोरंजन का विकास का अनुमान वेदो में आने वाले अश्वरोहण, साँस विद्या अखेट (शिकार) मलयुद्ध, नृत्य तथा युद्ध के वार्तालाप से लगाया जा सकता है।

01/09/16

(ii) **महाकाव्य काल ⇒ महाकाव्य काल मे रामायण और महाभारत काल भी आते है।**

रामायण मे मनोरंजन के बहुत से वर्णन मिलते है जैसे आखेट, भ्रमण या हाइके के निवास या जीव-जन्तु के प्रति प्रेम चिन्ह आदि विद्या का वर्णन है Champing स्वयंवर प्रथा मे एक प्रतियोगिता होती थी। ये सिर्फ धनुष प्रत्येचा चलाने की प्रतियोगिता थी।

अच्छे शक्तिशाली भी उसे चढ़ा नही पाये। यहाँ उनकी शक्ति और लोगो के मनोरंजन का उल्लेख मिलता है

हनुमान की शक्ति का विचित्र वर्णन है।

06/09/16

(iii) हिन्दु काल → महात्मा बुद्ध से धार्मिक विचारो का परिवर्तन हुआ और मनोरंजन का स्वरूप कुछ सात्विक प्रवृति के मनोरंजन का विकास हुआ, जैसे छोटे-छोटे खेलो का विकास हुआ कुंगफू, कराटे, सावलींग नामक खेलो का विकास हुआ। जिसमे मनुष्य दुसरो को बिना क्षति पहुचाएँ हुए मनोरंजन करने की कला को सिखाया जाता था। जिसे शारीरिक और मानसिक दोनो प्रकार की शक्तियो का विकास होता था।

(iv) मनोरंजन मध्य काल में (5वी शताब्दी से 19वी शताब्दी तक

रोमन समराज्य के पतन के बाद और पूर्नजागरण युग तक का समय आधुनिक मध्य काल कहलाता है। वस्तुत. यह सक्रमण कालीन स्थिती भी मध्य काल युग मे आदर और सदाचार कि शिक्षा के प्रति उत्सुकता और जागरूकता अधिक थी। सात वर्ष से अधिक आयु के बच्चो को शिक्षित बनाने की शिक्षा दी जाती थी।

14 वर्ष की आयु के बाद 21 वर्ष की आयु तक बच्चों या युवको को युद्ध कला की शिक्षा दी जाती थी। शारीरिक शक्ति में वृद्धि की शिक्षा दी जाती थी। धार्मिक उत्सव के रूप मे शक्तिशाली व बलवान व्यक्ति की पुजा की जाती थी। शारीरिक शिक्षा एवम मनोरंजनात्मक क्रियाओं का महत्व अधिक थी। इस काल मे चर्चो ने अधिकांश खेलो और क्रीड़ाओं को

Scanned by CamScanner

बढ़ने से रोक दिया था। नृत्य को भी निरउत्साह किया गया था। इसकाल में सिवीर लगाना उनका शौक था। सिवीर में चीता और शेर भालू आदि जानवर होते थे।

07/9/16
उस समय शिकार करना मध्ययुग का एक विशेष गुण माना गया था। उस समय वीरो के लिए शिकार उनके लिए युद्ध की तैयारी मानी जाती थी। मध्य युग में उनके कार्यो को खेल के लिए सुरक्षित रखा गया था। चौसड़ उस समय का प्रिय खेल था। इस युग में मनोरंजनात्मक क्रियाएँ विभिन्न प्रकार के खेल, जुआ, संगीत, नृत्य, घुड़सवारी, चक्का फेकना, शतरंज आदि थे। उस समय मौके वाले खेल अधिक लोकप्रिय थे। इस युग के निम्न वर्ग के लिए गाँव के पर्व या आपस में मजाक करना भार उठाना या भार फेकना या मुर्गे कि लड़ाई (cock fighting) बल वाले अभ्यास मनोरंजन के साधन थे। कुछ समय बाद अमीरो और गरीबो के लिए खेल बनाये गए जिसे लोगो ने अवकाश के समय खेलने लगे। फुटबाल जो England व पड़ोसी देशो में खेला जाता था। 18वीं शताब्दी में तीरबाजी राजाओ के लिए ज्यादा लोकप्रिय थी क्योंकि यह सैनिको के महत्व का मुद्दा था या कार्य था।

8/9/16

(3) General Principles of Recreation

मनोरंजन के समान्य सिद्धान्त ⇒

1) मनोरंजन एक स्वतंत्र एवम ऐच्छिक क्रिया है या किसी प्रकार से बल पूर्वक नहीं कराया जा सकता है। व्यक्ति किसी प्रकार की मनोरंजन या मनोरंजनात्मक क्रियाएं करने के लिए बाध्य नही है।

Scanned by CamScanner

1) मनोरंजन में भाग लेने के लिए कौशल (Skill) सीखना आवश्यक है। यह कौशल को सीखना शिक्षा के सिद्धान्त पर अनिवार्य है।

2) मनोरंजन अवकाश के समय का सदुपयोग है।

3) मनोरंजन सम्बन्धित शिक्षा मनुष्य को यह ज्ञान देती है कि उसे अवकाश के समय का प्रयोग इस प्रकार करे जो समाज द्वारा मान्य हो या जिसे समाज मान्यता देता हो।

4) मनोरंजन मनुष्य को पूर्ण एंवम सन्तुलित जीवन व्यतीत करने मे सहायता देता है।

5) मनोरंजन जीवन का एक मार्ग है।

6) मनोरंजन जीवन की आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्णती कर रचनात्मक आत्म प्रकाशन मे सहायक है।

7) शारीरिक, मानसिक एंवम संवेगात्मक जीवन की प्रगति में सहायक है।

8) आधुनिक जीवन के तनाव एंवम भार से स्वतंत्रता देता है

9) व्यक्तिगत या पारिवारिक जीवन के लिए सहायक है।

10) उत्तम नागरिकता में वृद्धि करता है एंवम प्रजातांत्रिक जीवन जीने में प्राण डालता है।

Roigaardet.com

Scanned by CamScanner

Historical development of recreation in India

1) **सिंधु सभ्यता काल में मनोरंजन** ⇒ सिंधु सभ्यता के विषय में लिखित सामग्री उपलब्ध नहीं है। किन्तु इस काल में उत्तखनन से प्राप्त समाग्री के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि इस काल में मनोरंजन क्रियाओ को खास महत्व प्राप्त था। उत्तखनन से प्राप्त मूर्तियों के शरीर के आकार, अंगो के सन्तुलन धातु एवं पत्थर नृत्य मुद्रा में खड़ी मूर्तियां खेल के विभिन्न उपकरण व खिलौनो तथा बड़ी ईटो पर बने चौपड़ आदि इस काल में मनोरंजन क्रियाओ का होने को प्रमाणित करते है।

2) **वैदिक काल में मनोरंजन** ⇒ सिंधु सभ्यता के बाद भारत में वैदिक सभ्यता का उदय हुआ। इस काल में जीवन के सभी क्षेत्रो में चारो ओर उन्नति हुई। इस काल में समाज में मनोरंजन के प्रयाप्त साधन थे जिससे मनुष्य स्वम को शारीरिक, मानसिक, समाजिक, संवेगात्मक व अध्यात्मीक तौर से मजबूत बनाता था। तीर कमान, तलवार बाजी, निशानेबाजी, घुड़सवारी आदि मनोरंजनात्मक क्रियाएं प्रचलित थी, प्राणायाम, सूर्यनमस्कार, व विभिन्न आसन भी इसी काल की देन है। चारो प्राचीन वेद ऋग्वेद, सामवेद, अथर्ववेद और यजुर्वेद भी इसी काल में लिखे गये हैं।

10/01/6

3) **उपनिषद काल में मनोरंजन** ⇒ इस काल को उत्तरवैदिक काल के नाम से भी जाना जाता है इस काल में उपनिषदो, साहित्य ब्राह्मण, सुत्रग्रंथ [illegible] आदि की रचना हुई इस युग बौद्धिक एवं आध्यात्मिक चिन्तन के साथ-साथ शरीर को

Rojgaralert.com

Scanned by CamScanner

हृष्ट पुष्ट बनाने के लिए मनोरंजन की समान क्रियाओं को समान महत्व दिया गया है। योग्य विद्या के अन्तरगत यम नियम व आसन व विभिन्न नृत्य क्रियाओं का जन्म इसी काल की देन है।

4) महाकाव्य काल में मनोरंजन → महाकाव्य या पौराणिक काल में मनोरंजन उच्च स्तर पर विद्यमान था। रचनीय बाल्मि रामायण में दशरथ के चारो पुत्रो का महाऋषि विश्वामित्र से शास्त्र विद्या सीखना तथा महाभारत में कौरव और पांडवो को शास्त्रविद्या का गुरु द्रोणाचार्य ने सीखाया। इस काल में शारीरिक शिक्षा व मनोरंजन की महत्वो है स्पष्ट करने की विभिन्न मनोरंजनात्मक क्रियाए जैसे अश्व दौड़, रथ दौड़, धनुषबाजी, मलयुद्ध, नृत्य विद्या नाटक, चौपड़ आदि इस काल में चरम सीमा में थे। विद्यार्थी के ब्राह्मण होने पर शस्त्र धनुषबाण, क्षत्री होने पर तलवारबाजी, वैश्य होने पर भाला और शुद्र होने पर गदा चलाने की कला सीखने का प्रावधान था।

5) बौद्ध कालीन युग में मनोरंजन → इस काल में यद्यपि बौद्ध दर्शन की प्रधानता थी। फिर भी मनोरंजन का महत्व कम नहीं था। बौद्ध विहार में भिक्षुओ को कठोर अनुशासीत प्रतिबन्धित जीवन जीया पडता था किन्तु ऐसे अनेक प्रमाण मिलते है कि बौद्ध विहार में खेलकूद एवं व्यायाम को स्थान दिए जाने का संकेत मिलता है "चुल्लवग्ग" नामक ग्रंथ में ऐसे खेलो तथा मनोरंजन क्रियाओ की सुची दी गई है। इस काल में महाकाव्य काल की विभिन्न मनोरंजनात्मक क्रियाए की जाती रही है।

6) मौर्य तथा मौर्योत्तर काल मे मनोरंजन → कौटिल्य की

अर्थशास्त्र मे चीनी यात्री मैगस्थनीज की यात्रा वृत्तयान्तो से पतंजली के महाभाष्य आदि से यह स्पष्ट होता है कि इस काल मे मनोरंजन क्रियाकलापो सैन्य कला से सम्बन्धित कौशलो का नृत्य अभ्यास कराया जाता था। इसी प्रकार कुषाण कालीन मूर्तियाँ इसी काल मे मनोरंजन के महत्व को स्पष्ट करने के लिए काफी है।

12/9/16

7) गुप्त तथा गुप्तोत्तर काल में मनोरंजन ⇒ इस काल को भारत के स्वर्ण काल के रूप या स्वर्ण काल के नाम से जाना जाता है। इस काल में मनोरंजन की अनेक क्रियाएं प्रचलित थी। तक्षशील विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में धनुरविद्या, तलवारबाजी, आदि का उल्लेख मिलता है। गुप्तकाल मे रचित साहित्य पुराण व धर्मशास्त्रो मे दिये गये विभिन्न शारीरिक कौशलो से सम्बन्ध व्यायाम मनोरंजन के दृष्टि से आयोजित किये जाने वाले मल्लयुद्ध, पशुयुद्ध, नृत्य एवं नाटक के विवरण मनोरंजन के महत्व को स्पष्ट करते है।

8) राजपूत काल में मनोरंजन ⇒ राजपूत लोग युद्ध प्रेमी थे। तथा शारीरिक क्रियाओं के द्वारा स्वयं को हृष्टपुष्ट रखते थे। इस काल मे प्राचीन गुरुकुल पद्धति का प्रारम्भ जारी था। गुरु अपने गुरुकुलो मे शिष्यों को धनुरविद्या, निशानेबाजी, मल्लयुद्ध आदि की शिक्षा देते थे। गुरु सोमनाथ शर्मा मेवाड़ के एक प्रसिद्ध शास्त्रविद्या में निपुण थे। इस काल में नृत्य व संगीत की शिक्षा दी जाती थी। शतरंज मनोरंजन का सबसे लोकप्रिय खेल था।

9) मुसलिम काल में मनोरंजन ⇒ आरम्भिक मुगल सम्राटो को खुले मैदान में खेलो

व मनोरंजन की रूचि विरासत में प्राप्त हुई। बाबर एक अच्छा शिकारी था। बाबर ने गंगा समेत अनेक नदियों को तैर कर पार किया था। वह मनोरंजन के लिए तैरता था। अकबर ने मनोरंजन के लिए विभिन्न पक्षीयो बाजो, कबूतरो को रखा था। जहांगीर शिकार का शौकीन था। जहांगीर काल मे मनोरंजन के लिए हिरणो का शिकार खेलना अत्य लोकप्रिय था। इसके अलावा पशुयुद्ध मनोरंजन, कुश्ती लड़ना, पोलो तथा कबूतरबाजी, लोकप्रिय थी। अकबर ने गद्दी पर बैठने के बाद मनोरंजन के लिए 20 हजार से अधिक कबूतर पाले थे। शतरंज, पचीसी, चौपड़ के साथ-साथ कुश्ती लड़ना, पोलो, तथा कबूतर बाजी लोकप्रिय थे। अकबर के काल मे मुजरा और मुसायरा भी अत्यन्त लोकप्रिय थे। घुमक्कड़ बाजीगर तथा लोकप्रिय नृत्य, मुर्गो, बैलो, भेडो का द्वन्द युद्ध मनोरन्जक के साधन थे। मुसलमान, इदुलफितर, इदुल जुहा, मोहरम आदि मनाते थे।

10) <u>ब्रिटिश काल में मनोरंजन</u> ⇒ ब्रिटिश काल मे परमपरागत मनोरजन के ऊपर पाश्चमी मनोरंजन का प्रभाव भी पड़ा। 1854 ई० मे वुड घोषणा पत्र मे भारत मे अंग्रेजी शिक्षा को प्रारम्भ हुआ। जिसके फलस्वरूप ब्रिटिश काल मे प्रारम्भिक दौर मे शारीरिक शिक्षा व मनोरंजन की तरफ विशेष ध्यान नही दिया गया। पूर्ववैदिक काल से चली आ रही मनोरंजक क्रियाओ के विकास मे रूकावट आई तथा भारत मे मनोरंजन के लिए जीवन को वास्तविक परिस्थतीयो के साथ जोड़ कर व्यहवारिक महत्व प्रदान था। वह समाप्त हो गया किन्तु अंग्रेज अपने साथ पाश्चमी के अनेक मनोरंजन खेल जैसे क्रिकेट, हॉकी, फुटबॉल, जिमनास्टिक आदि अपने साथ लाये तथा धीरे-धीरे इन मनोरंजक क्रियाओ ने भारत मे अपने पैर फैलाने प्रारम्भ किए। किन्तु ये सभी खेल जन साधारण मे अपनी पकड़ नही बना पाई।

Scanned by CamScanner

उच्च वर्ग के लोगो मे ही ये मनोरंजन के तौर पर खेली जाने लगी इस काल मे सेना से रिटायर्ड सेनानी, स्कूलो मे शारीरिक शिक्षा व मनोरंजन की क्रियाओ के गतिविधियो का संचालीत करते थे।

19वी शताब्दी मे ब्रिटिश सरकार ने शिक्षा को राज्य के अधिन कर दिया। 1817 मे शिक्षा का कार्यक्रम देखने के लिए केन्द्रीय सरकार उत्तरदायी बनी और 1882 मे भारतीय शिक्षा आयोग ने शारीरिक शिक्षा को मनोरंजक क्रियाओ के तौर पर मान्यता दी जिसके फलस्वरूप स्कूलो मे मनोरंजक क्रियाए जिमनास्टिक, ड्रील, डम्बल, लेजियम आदि लोकप्रिय हुई।

1894 मे शारीरिक शिक्षा व मनोरंजन को एक अनिवार्य विषय बनाने का प्रयास किया गया किन्तु यह असफल सिद्ध हुआ। इस काल मे मनोरंजन के क्षेत्र मे विभिन्न संस्थाओ ने अपना सराहनीय योगदान दिया। जो निम्न है।

(1) अखाड़ा प्रथा
(2) क्षेत्रीय व स्थानी उत्सव
(3) तीज त्यौहार या पशु मेले
(4) लोकगीत व नृत्यो के अखाड़े
(5) गैर सरकारी संस्थाए
(6) श्री हनुमान व्यायाम प्रचारक मण्डल आमरावती की संस्थपना

(5) गैर सरकारी संस्थाए ⇒ मनोरंजन के क्षेत्र मे इस ... अनेक गैर सरकारी संस्थाओ का योग्य दान भी। इन संस्थाओ मे जिमनास्टिक, व्यायाम शाला, अखाड़ा तथा क्रियामन्डली की स्थापना हुई जिसके कारण सूर्य नमस्कार, दंड बैठक, लोक नृत्य, मलयुद्ध, कब्बडी, खोखो आदि खेल लोकप्रीय हुई

Scanned by CamScanner

19/9/16

(6) श्री हनुमान व्यायाम प्रचारक मण्डल अमरावती की संस्था

इस संस्था की स्थापना ने एक नया क्षेत्र प्रदान किया 1914 ई मे दो वैध्य भाइयों ने अम्बादास परन्तु वैध्य तथा अनन्त पन्त वैध्य ने भारत मे शारीरिक शिक्षा के व मनोरंजन के विकास हेतु इस संस्था की स्थापना की यहाँ पर मनोरंजन की विभिन्न क्रियाये डम्बल, लेजिम मलखम दण्ड आदि का प्रशिक्षण दिया जाने लगा। इन सब के अतिरिक्त ब्रिटिश काल मे मनोरंजन के क्षेत्र में 1920 ई० मे Y.M.C.A मद्रास चेन्नई की स्थापना हुई 1931 ई० मे सरकारी शिक्षा कालेज हैदराबाद की स्थापना हुई। तथा 1932 ई० सरकारी कोलकत्ता कॉलेज तथा लखनऊ मे कॉलेज। इन सब संस्थाओं में मनोरंजन क्रियाओं को अहम स्थान दिया गया तथा इसे विषय के रूप मे स्वीकार किया गया।

1946 ई मे अखिल भारतीय शारीरिक शिक्षा कांग्रेस द्वारा भारत मे शारीरिक शिक्षा तथा मनोरंजन संगठन की स्थापना की गई। जिसका मुख्य उद्देश्य भारत मे मनोरंजन के क्षेत्र में व्यापक प्रचार व प्रसार करना था।

Rojgaralert.com

Scanned by CamScanner

UNIT - II

Organization and Administration of Recreation

1. Agencies Offering Recreation
भारत में मनोरंजन प्रदान करने वाली संस्थाएँ

भारत मे मनोरंजन पहले की अपेक्षा महत्व -पूर्ण हुआ है। यहाँ पर भी अनेक सरकारी अर्द्धसरकारी व निजी संस्थाएँ तथा समाजिक संस्थाए लोगो को मनोरंजन उपलब्ध करने हेतु ये संस्थाए कार्य करती है। ये संस्थाए गाँवो में, कस्बों मे तथा शहरो के साथ-साथ औद्योगिक इकाईयो दफ्तरो व अन्य कार्यो स्थलो पर भी लोगो के लिए मनोरंजन उपलब्ध कराने में लगी है। भारत में मनोरंजन उपलब्ध कराने वाली निम्नलिखत Agencies या संस्थाएँ है।

1) सरकारी संस्थाए (Government Agencies)
2) ऐच्छि संस्थाए (voluntary Agencies)
3) Private Agencies (निजी संस्थाए)
4) Commercial Agencies (व्यवसायिक)
5) Other Agencies (अन्य संस्थाए)

Rojgaarafer.com

Scanned by CamScanner

1) Government Agencies :- सरकारी Agencies मनोरंजन घरो की व्यवस्था करने तथा मनोरंजन उपलब्ध करने में सर्वाधिक योगदान देती है। इस प्रकार की Agencia की देख रेख केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकार व कई स्थानो पर केन्द्र व राज्य सरकार दोनो को संयुक्त रूप से की जाती है। Government Agencies के कार्य स्पष्ट रूप से समझने के लिए व करने के लिए दो भागो में बाटा गया है।

1) केन्द्रीय सरकार के अधिनश मनोरंजन एजेन्सिया

* मनोरंजन के विकास हेतु आवश्यक कदम उठाती है एवं मनोरंजन के विकास के लिए अलग अलग एजेन्सियों पर अपना नियंत्रण रखती है।

E.g. - DD1

* मनोरंजन में किये जाने वाले साधनो की देख भाल करती है। मनोरंजन घरो के अलावा ऐतिहासिक स्थलो की देख भाल एवं प्रबन्ध करती है। मनोरंजन उपलब्ध करने के विषय में सुझाव देती है।

* मनोरंजन के बारे में प्रति सरकारों को सलाह देती है।

* मनोरंजन के बारे मे अधिक से अधिक सूचना लोगो तक पहुचाने की कोशिश करती है केन्द्रीय सरकार के अधिन निम्न एजेन्सिया कार्य करती है।

Rojgaralert.com

Scanned by CamScanner

Central Board of physical education and recreation

इसका मुख्य मनतव्य भारत में शारीरिक शिक्षा व मनोरंजन के क्षेत्र में व्यापक प्रचार प्रसार करना तथा स्कूल, कॉलेज में इस विषय को लागू करना।

राष्ट्रीय पुस्तकालय (Central Libarty)

पूरे देश में छोड़े - छोड़े महानगरो व शहरो में राष्ट्रीय पुस्तकालय की स्थापना की गई है। यहाँ पर नागरिक पुस्तके व अन्य महत्वपूर्ण सामग्रीयो के द्वारा अपना मनोरंजन करते हैं व अपने ज्ञात में वृद्धि करते हैं।

राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनीया

केन्द्र सरकार समय - समय पर राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनीयों का आयोजन करती है। इनमे विज्ञान प्रदर्शनी, खेल प्रदर्शनी ऐतिहासिक धरोहर की प्रदर्शनी आर्ट और क्राफ्ट आदि प्रदर्शनीयो वह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने से लोगो में मनोरंजन की वृद्धि होती है।

Sport fedration खेल संघ

भारत में विभिन्न खेल संघ है जो राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न प्रतियोगिताएँ करवाते हैं

Rojgaralert.com

Scanned by CamScanner

जिसके माध्यम से लोगो के अंदर प्रतियोगिता भावना विकसित कर के मनोरंजन कराने में सहायक होते हैं।

राष्ट्र सरकार :=>

देश में भिन्न-भिन्न राज्य सरकारो को भी लोगो का मनोरंजन उपलब्ध कराने कि दिशा में कार्य करती है। केन्द्र सरकार राज्य सरकारो को मनोरंजन के क्षेत्र में कार्य करने के लिए अधिकार प्रदान करती है। मनोरंजन के क्षेत्र में कार्य रत विभिन्न Agencie राज्य में हो रहे मनोरंजन के विकास को फिल्मे या दृश्य दिखा कर लोगो का मनोरंजन करते हैं। राज्यो का खेल विभाग व विभिन्न राज्य स्तरीय खेल संघ इस क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। तथा ग्रामीण स्तर से राज्य स्तर के अनेक खेल tournament का आयोजन कर मनोरंजन करते हैं। अनेक लोग इनको देख कर अपना मनोरंजन करते हैं। राज्य सरकार के अधिनस्थ निम्न Agencie कार्य करती हैं।

=> नगर पालिका :=> शहरों में नगर पालिका और ग्रामों में ग्राम पंचायत नगर वासियो के लिए मनोरंजन के साधन उपलब्ध कराने के लिए उत्तरदायी हैं। नगर पालिका, सार्वजनिक पार्क, सार्वजनिक मनोरंजन ग्रह आदि कि व्यवस्था करती हैं साथ ही समय-समय पर विभिन्न मेलो जैसे कृषि मेला, पुस्तक मेला स्वास्थ मेला व खेल मेला आदि।

Rojgaaralert.com

Scanned by CamScanner

19/09/16

सार्वजनिक पुस्तकालय :→ ज्यादातर शहरो मे छोटी या बड़ी लाइब्रेरी मिलती है। जिसमे लोगो को दूसरे विषय से सम्बन्धित किताबे पढ़ने के अलावा अन्य उपयोगी मैगजीन जनरल आदि पढ़ने को मिलते है इनसे व्यक्तियों का मनोरंजन होता है। बड़ी लाइब्रेरीयो मे Lacture Hall भी होते है। जिनमे समय-समय पर वाद-विवाद या सामूहिक विचार विमर्श का आयोजन होता रहता है।

संग्रहालय (Meusium) :→ हमारी प्राचीन ऐतिहासीक धरोहरो को सुरक्षित रखने के लिए विभिन्न संग्रहालयों का निर्माण किया गया है यहा पर लोग विभिन्न ऐतिहासिक चीजो को देख कर अपना मनोरंजन करते है। इन संग्रहालयो मे विदेशी पर्यटक भी ज्ञान और मनोरंजन करते है।

पार्क एवम भवन :→ सरकार द्वारा मनोरंजन सुविधा उपलब्ध कराने हेतु सार्वजनिक पार्क एंव भवनो का निर्माण कराया जाता है तथा पुराने ऐतिहासीक भवनो एंव पार्को के माध्यम से भी मनोरंजन की सुविधा उपलब्ध कराई जाती है अनेक पुराने भवन जैसे लाल किला, फतेहपुर सीकरी, जन्तर-मन्तर शीशमहल, हवामहल आदि के भ्रमण से अपना मनोरंजन करते है। इसके अलावा विभिन्न पार्को पिन्जोड़ गार्डन, रॉक गार्डन, रोज गार्डन, छत्तीसगढ़ चिड़ियाघर और विभिन्न राष्ट्रीय पार्क, Forest Naitnal Park, राजाजी राष्ट्रीय पार्क आदि

20/09/16

ऐच्छिक एजेन्सिया (Voluntary Agencie) :→

Scanned by CamScanner

इस प्रकार की मनोरंजन एजेन्सिया सदस्यो द्वारा दिये गये धन की मदद से चलाई जाती है मनोरंजन के क्षेत्र मे ऐसी अनेक एजेन्सिया अपना महत्व रखती है तथा YMCA YWCA इस तरह के एजेन्सियो के उधारण है इन संस्थाओ के दो College channai मे व Banglore मे है। यह संस्थाए भारत मे शारीरिक शिक्षा वह मनोरंजन के विकास के लिए प्रयास रत है। ऐच्छिक एजेन्सिया द्वारा व्यक्तियों मे परस्पर भाईचारा विकसीत कर उन्हे एक दूसरे के समीप लाया जाता है। गाव मे विभिन्न युथ कलब खेल कल्बो के द्वारा अपने अपने स्तर पर मनोरंजन व खेल क्रीडाओ का आयोजन किया जाता है। इन खेल कल्बो का सदस्य बनने के लिए एक निर्धारित फीस/शुल्क होती है। बाद मे सभी सदस्य अपने एक कार्यकारणी बना कर विभिन्न कार्य करते है। आज कल अनेक संगीत कल्बो द्वारा शहरो व गावो मे गीतो के माध्यम से लोगो को मनोरंजन करते है इसके लिए कुछ निर्धारित शुल्क लगता है।

Private Agencia ⇒ Private एजेन्सिया ऐच्छिक एजेन्सियो के तरह ही समाज पर निर्भर नही करती है इन एजेन्सियो पर एक या एक समूह के अधिकार होता है। यह एजेन्सिया अपने सदस्यो के लिए Program बनाकर क्रियाभीत करती है। इनके निम्न रूप है! –

* औद्योगिक संघ श्रामिको
* चर्च या गिरजाघर
* खेल संघ

21/09/16

Page 20

व्यवसायिक एजेन्सिया → इस प्रकार की एजेन्सियो द्वारा मनोरंजन के कार्यक्रम देखने के लिए व्यक्तियों को कुछ शुल्क देना पड़ता है जैसे सिनेमा घर, Open theater आदि इस तरह की एजेन्सियो के लिए मनोरंजन किया जाता है। इसके अलावा ये संस्थाएं समय-समय पर क्षेत्र विशेष मे व्यक्तित्व का Program भी रखते है जैसे प्रसिद्ध गायको, लता मंगेसकर, आशा भोसले, मोहम्मद रफी, किशोर कुमार आदि जैसे व्यक्तित्व का Program रखे जाते है।

अन्य एजेन्सिया → उपरोक्त एजेन्सियो के अलावा अन्य बहुत सी एजेन्सिया भी मनोरंजन के क्षेत्र मे कार्य कर रही है जो निम्न है।

* व्यक्तित्व एंव होम एजेन्सिया - जैसे Walking, Map reading, Painting.
* सांस्कृतिक परम्परा - लोक गीत, लोक नृत्य आदि प्राचीन परम्परा का आदान-प्रदान
* शैक्षणिक संस्थाएं - मनोरंजन प्रदान करने के लिए शैक्षणिक संस्थाए अपना एक विशेष महत्व रखती है। अध्यापको द्वारा विद्यार्थीयो को मनोरंजन की महत्व के बारे मे विस्तार मे बताया जाता है ताकि विद्यार्थी अपने खाली समय का सदुपयोग कर अपना मनोरंजन कर सके विद्यार्थीयो को प्रतिदीन शारीरिक क्रियाए जैसे - लेजियम, डमबल, हुपस, लाठी से कलाबाजी आदि का अभ्यास कराया जाता है। जिससे बच्चे अपना मनोरंजन करता है। इसके अतिरिक्त विद्यालयो मे समय

समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। जिसमें विद्यार्थी भाग लेकर बच्चे अपना सांवेगीक विकास एवं मनोरंजन करते है।

24/09/16 Education of Recreation Programme
मनोरंजनात्मक कार्यक्रम का मूल्यांकन

1) उत्तम स्वास्थ
2) शक्ति अथवा ऊर्जा का सदुपयोग
3) उचित विकास
4) आत्म विश्वास तथा अच्छी आदतें
5) स्पर्धा और विजय की भावना का विकास
6) आदर्श नागरिकता का विकास
7) संतुष्टी और साहस में वृद्धि
8) खाली समय का उचित उपयोग
9) नैतिकता एवं चरित्र का विकास
10) बालको का प्रभावी शिक्षण

UNIT- (III rd)

26/09/16 Meaning of Play (खेल का अर्थ)

सामान्य स्वभाविक प्रवृत्तियों मे खेल की प्रवृत्ति (Tendency) सबसे अधिक व्यापक और महत्वपूर्ण है। नालंदा विशाल शब्द सागर के अनुसार खेल का समान आनन्द है चित की उमंग या मन का बहलाव या व्यायाम के लिये इधर उधर उछल कूद, दौड़ धूप या कोई साधारण कृत (कार्य), मनोवैज्ञानिको ने खेल का अर्थ निम्न प्रकार से व्यक्त किया है।

Rojgaralert.com

Scanned by CamScanner

मैकडूगल के अनुसार :- " खेल स्वयं अपने लिये किये जाने वाली एक क्रिया है यह खेल एक निरुद्देश्य क्रिया है जिसका कोई लक्ष्य नही होता।"

हरलॉक के अनुसार :- " अंतिम परिणाम का विचार किये बिना कोई भी क्रिया जो उसे प्राप्त होने वाले आनन्द के लिये की जाती है उसे खेल कहते है।

क्रो तथा क्रो के अनुसार :- " खेल कि उस क्रिया के रूप मे परिभाषा की जा सकती है जिसमे एक व्यक्ति उस समय व्यस्त होता है जब वह कार्य करने के लिए स्वतंत्र होता है जिसे वो करना चाहता है।

खेल की परिभाषा :-

W.M. Raywarn के अनुसार :- " खेल एक साधन है जिसका उपयोग दूसरे या स्वयं द्वारा उस समय किया जाता है जब हमारी विभिन्न मूल प्रवृत्तियां अपने आप को प्रकाश मे लाने की चेष्टा करती है।"

खेल द्वारा हमारी अनेक मूल प्रवृत्तियाँ तथा साहस मूल प्रवृत्तियों का शोधन होता है।

खेलो की विशेषतायें इस प्रकार हैं :-

1. खेल एक जन्म-जात स्वभाविक प्रवृत्ति है।
2. खेल, स्वतंत्र और आत्म प्रेरित होता है।
3. खेल स्फूर्ति तथा आनन्द प्रदान करता है।

Scanned by CamScanner

4. खेल में कुछ सीमा तक रचनात्मक होती है।
5. खेल का क्रिया के सिवाय कोई उद्देश्य नहीं होता है।
6. भाटिया के अनुसार :- "खेल स्वयं खेल के लिये खेला जाता है।
7. की व क्रो के अनुसार :- "खेल बालक की सम्पूर्ण रूची व ध्यान को केन्द्रीत कर लेता हैं।
8. ड्रेवर के अनुसार :- "खेल एक शारिरीक और मानसिक क्रिया है।"

4/10/16

9. कार्ल ग्रुस के अनुसार :- "खेल एक साधन है किन्तु मैं यह नहीं बता सकता कि इसका लक्ष्य क्या है? केवल खेल ही उसका लक्ष्य हो सकता है अतः खेल जन्म-जात सहज प्रवृति है इसका लक्ष्य आनन्द प्राप्ति है।

2. Different between खेल और कार्य

कार्य का अर्थ किसी भौतिक लक्ष्य की पुर्ति हेतु की जाने वाली क्रिया है।

खेल को भी कुछ लोग कार्य की श्रेणी में रखते है। खेल उसी समय कार्य हो सकता है। जब वह धन कमाने के लिए किया जा रहा हो। अतः खेल तथा कार्य में निम्न अंतर है।

1) खेल का उद्देश्य मनोरंजन होता हैं। कार्य का उद्देश्य मनोरंजन नहीं होता है।

Rojgaralert.com
Scanned by CamScanner

2) खेल का उद्देश्य उसकी क्रिया में निहित रहता है। कार्य का उद्देश्य किसी भावी बात पर निहित होता है।

3) खेल का संबंध साधारणता या सामान्य काल्पनिक जगत से होता है। कार्य का संबंध वास्तविक जगत से होता है।

4) खेल आयु बढ़ने के साथ-साथ कम होता है। कार्य आयु बढ़ने के साथ-साथ बढ़ता है।

5) खेल से केवल खेलने वाले को लाभ होता है। कार्य से दूसरे लोगों का भी लाभ होता है।

6) खेल से आनंद प्राप्त होता है। कार्य से आनंद प्राप्त होना आवश्यक नहीं है।

6/10/16

7) खेल बन्द करवाने से बालक में क्रोध और दुख उत्पन्न होते है। कार्य बन्द करवाने में उसमें ये भावनाएँ उत्पन्न नहीं होती।

8) खेल में बालक किसी प्रकार का बंधन अनुभव नहीं करता है। जबकि कार्य में वो बंधन का अनुभव करता है।

9) खेल बालक की स्वयं की इच्छा पर निर्भर करता है। कार्य में उसे दूसरे की इच्छा पर आश्रित रहना पड़ता है।

10) खेल में क्रिया का महत्व स्वयं की क्रिया में होता है। कार्य में क्रिया का महत्व किसी अन्य बात में होता है।

6/10/

Rojgaralert.com

Scanned by CamScanner

3. Theories of Play
खेल का सिद्धान्त

1) Surplus energy theory (अतिरिक्त ऊर्जा का सिद्धान्त)

यह सिद्धान्त संभवतः सबसे पुराना है। इसके प्रतिपादक जर्मन कवि शीलर और अंग्रेज दार्शनिक माने जाते हैं। इसलिए इस सिद्धान्त को शीलर व स्पेन्सर का सिद्धान्त कहा जाता है। बालक को निरंतर खेलते हुए और निरउद्देश्य खेलते हुए देख कर इन विद्वानों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि वह कार्य से बची हुई शक्ति का खेल में प्रयोग करता है। इसकी पुष्टि "खेल साधारणतः अतिरिक्त शक्ति का प्रदर्शन माना जाता है।" आधुनिक युग में इस सिद्धान्त का उपयोग नहीं किया जाता है। स्कीनर और हैरीमैन के अनुसार इसके तीन कारण है।

- बीमार व्यक्ति में अतिरिक्त शक्ति नहीं होता है फिर भी वो खेलता है।
- बहुत से खेल अतिरिक्त शक्ति चाहने के बजाय शक्ति प्रदान करते है।
- विकास की विभिन्न अवस्था में बालक की खेल संबंधित रुचियां बदल जाती है।

6/10/16 Antisepitic theory (पूर्ण अभिनय का सिद्धान्त)

इस सिद्धान्त के प्रतिपादक मालब्रेस और मुख्य समर्थक Swizerland का मनोवैज्ञानिक कार्लरूस है। बच्चे में भूत जीवन की तैयारी करने की आंतरिक परिवर्तन

Scanned by CamScanner

7/10

होती है। गुड़िया से खेलने वाले बालिका। बालक अज्ञात रूप से बच्चे की देखभाल करने का प्रशिक्षण करते है। करती है।

आधुनिक मनोवैज्ञानिक यह बताते है कि बालक में खेल की आंतरिक प्रवृति होती है पर वे यह नही मानते है कि वह खेल द्वारा ज्ञातय अज्ञात रूप से व्यस्त जीवन की तैयारी करता है स्कीनर व हैरीमैन के अनुसार बालक खेल द्वारा अनेक बाते सीखता है पर यह ज्ञात या अज्ञात द्वारा रूप सीखने के लिए नही खेलता है।

पुर्नवृत्तिक का सिद्धान्त :- इस सिद्धान्त के प्रतिपादक G. Stanley है। बालक अपने खेलो में प्रजाति अनुभव की पुनरावृत्ति करता है। दूसरे शब्दों में वह अपने खेलो को माध्यम से अपने पूर्वजो के उन सभी कार्यो को दोहराता है इस प्रकार के कुछ कार्य है दौड़ना, लड़ना, पत्थर मारना, वृक्षो पे चढ़ना आदि।

इस सिद्धान्त को कुछ समय तक लोगो ने स्वीकार किया फिर इसका त्याग कर दिया गया इसका कारण बताते हुए क्रो व क्रो ने लिखा है अब यह विश्वास नही किया जाता है कि बालक अर्जित लक्षणो और विशेषताओ को वंशानुक्रम से प्राप्त किया गया है।

मूल प्रवृत्ति का सिद्धान्त :- इस सिद्धान्त का प्रतिपादक Mac kdugal इनके अनुसार खेल का कारण मूल प्रवृतियो में परिपक्वता है। जब मूल प्रवृतियाँ अपने समय से पहले परिपक्व हो जाती है तब उनकी अभिव्यक्ति खेल द्वारा होती है।

Scanned by CamScanner

7/10/18

पुन: प्राप्ती का सिद्धान्त :—

इस सिद्धान्त के प्रतिपादक बर्लिन निवासी लाजारस और समर्थक J. T. W. Patrick इस सिद्धान्त के अनुसार खेल द्वारा शक्ति की पुन: प्राप्ती होती है। खेल इसलिए खेला जाता है। जिससे की व्यक्ति उस शक्ति को फिर से प्राप्त करले जो उसने अपना कार्य करते समय थकान के कारण नष्ट की है इसलिए बालक कार्य करने के बाद खेलना चाहता है इस सिद्धान्त को अस्वी. करने के लिए B. N. Jha ने लिखा है कि बालक केवल खेल के लिए अनेक खेल खेलता है। यह सिद्धा का कोई कारण नही बताता है।

परिष्कार का सिद्धान्त | → इस सिद्धान्त के प्रतिपादक का अर्थ है। शाब्दिक अर्थ है शुद्धि। बालक वंशानुक्रम द्वारा अपने जंगली पूर्वजो की प्रवृत्तियाँ प्राप्त करता है। खेल इनको बाहर निकलने या बालक का परिष्कार करने का साधन है। खेल की क्रिया परिष्कार करती है। यह कुछ अवरुद्ध प्रवृत्तिया या संवेगो को बाहर निकालने का मार्ग ~~करीन~~ प्रदान करती है। जिनको बाल्यकाल या व्यस्त जीवन मे पर्याप्त प्रमाण अभिव्यक्ति नही मिल सकती है।

Rojgaralert.com

Scanned by CamScanner

Date
Page

UNIT – IV

Meaning of camp ⇒ शिविर का अर्थ –

विद्यालय परिसद एंव घर से बाहर प्रकृति के खुले एंव नियंत्रित वातावरण में प्रजातांत्रिक रूप में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमो में सहभागी होकर या करके सीखना या सीखने को शिविर कहते है। यह कुछ दिनो के लिए घर एंव विद्यालय या शहर के बाहर रहकर समय व्यतित करने के कार्यक्रमो को शिविर कहते है।

Deffination of camp ⇒

शिविर वह संयोजन है जो छात्रो को निसर्ग के गोद में रहकर स्वतंत्रता स्वालम्बन चरित्र निर्माण व्यवहारिक ज्ञान का अवसर प्रदान कर उसे सामूहिक जीवन में जीने की कला सीखता है"

शिविर का उचित समय ⇒

1) शिविर का उचित समय जिस स्थान पर शिविर की स्थापना करना है वहाँ के मौसम व जलवायु को हमेशा ध्यान मे रखना है चाहिए क्योंकि हमारे भारतवर्ष में वसन्त ऋतु को सर्वोत्तम माना गया है जलवायु के आधार पर इस समय ना अधिक गर्मी और ना अधिक सर्दी होती है।

शिविर की अवधि –

शिविर की समयावधि शिविर के प्रकार प्राप्त सुविधाओ स्वरूप एंव उद्देश्य पर निर्भर करता है प्रत्येक शिविर को उसकी निर्धारित अवधि पर ही समाप्त करना चाहिए।

Rojgaaralert.com

Scanned by CamScanner

शिविर के स्थान का चुनाव ⇒ जिस समय शिविर के स्थान का चयन हो उस समय हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि शिविर का स्थान अच्छा व उपयोगी हो। शिविर के लिये स्थान का चुनाव करते समय निम्न बातो का ध्यान रखना चाहिए।

1) शिविर के स्थान का चयन शहर के आबादी से दूर होना चाहिए।

2) शिविर का स्थान इस प्रकार का हो जो कि शिविर के उद्देश्यो की प्राप्ति में सहायक सिद्ध हो।

3) शिविर का स्थान शान्त वातावरण में होना चाहिए शिविर स्थल की जलवायु व वातावरण शान्त एवं स्वच्छ होना चाहिए।

4- शिविर स्थल हिंसक पशुओ से दूर होना चाहिए।

5. शिविर स्थल पर भूमि ऐसी होना चाहिए जहां पर विभिन्न क्रियाओ को समुचित रूप से आयोजित किया जा सके।

6. विद्यार्थियों के संख्या के आधार पर शिविर स्थल का चयन किया जाना चाहिए।

7 शिविर स्थल पर छात्रों व छात्राओं को नहाने के लिए पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिए

8. शिविर स्थल के पास तालाब नदी झील झरना आदि होना चाहिए जिससे प्राकृतिक कार्यक्रमों के आयोजन के लिए सहायता प्राप्त हो सके।

शिविर के प्रकार ⇒ एक दिवसीय शिविर
└ कुछ दिनो का शिविर

2-

Scanned by CamScanner

3- स्थायी शिविर
4- सप्ताह के अन्त के शिविर
5- अन्य शिविर

एक दिवसीय शिविर ⇒ यह एक दिन अर्थात 24 घण्टे का शिविर होता है इन शिविरों मे शिविरार्थी अपना भोजन साथ मे ले जाते है इन शिविरों मे मौसम का ध्यान रखा जाता है एक दिवसीय शिविर ऐसे मौसम मे आयोजित किये जाते है जिसमे बर्तनों व वस्तुओं की अधिक आवश्यकता नही पड़ती है।

कुछ दिनों का शिविर ⇒ इन कैम्पों का आयोजन विशेषतर प्रशिक्षण के लिये किया जाता है इन कैम्पों की समयावधि पन्द्रे तक हो सकती है इन कैम्पों मे प्रमुख 7 शारीरिक शिक्षा का शैक्षणिक भ्रमण या स्काउट गाइड वाले NCC वाले सेन्टर जाता है, 2 (आपात काल शिविर)

स्थायी शिविर ⇒ जिस स्थानों पर स्थायी शिविर की व्यवस्था होती है उन स्थानों पर इस प्रकार के शिविरों की स्थापना की जाती है। विश्व मे ऐसे शिविरों की संख्या बहुत कम है भारत मे इस प्रकार के केवल एक ही कैम्प संचालित है जो उत्तराखण्ड के नैनीताल के कोर्बट कैम्प सातताल मे स्थित है।

सप्ताह के अन्त के शिविर ⇒ यह शिविर भी एक स्थायी संगठन का होता

है इसमें व्यक्ति पहले से ही निश्चित स्थान पर शनिवार शाम को जाते है और रविवार शिविर में व्यतीत कर लौट आते है इन शिविरों के स्थान परिवर्तन एवं विषय के लिए पहले से ही विचार विमर्श कर लेते है।

अन्य शिविर :-

विभिन्न प्रकार के आवश्यकताओं की पूर्ति एवं उद्देश्य की पूर्ति के लिए विभिन्न प्रकार के शिविरों का आयोजन किया जाता है जैसे -

1- संकटकालीन प्रशिक्षण शिविर
2- श्रमदान
3- लोकसेवा व समाज सेवा शिविर
4- ग्रामोत्थान / गाँवो के विकास एवं प्रौढ़ शिक्षा
5- सम्बन्धी शिविर
6- एथलेटिक्स या अन्य शारीरिक शिक्षा व प्रशिक्षण शिविर।

शिविर के आयोजन को प्रभावित करने वाले कारक / तत्व :-

शिविरों में इकाईयों के विकेन्द्रीकरण की विधि अपनायी जाती है विशाल समूह को 12 या 14 साथियों को छोटी ईकाइयों में बांट दिया जाता है इनका छोटा आकार पारिवारीक अपनत्व की जीवन को एहसास की भावना को उत्पन्न करता है इसमे प्रत्येक शिविरार्थियो की एक स्वतंत्र पहचान होती है तथा उसके विचारो का सम्मान किया जाता है उसकी आपसी समझदारी तथा भाईचारे के लेन - देन की बहुत जरुरत होती है तथा उसके सहभागी शिविरार्थी से आपस में सलाह मशवरा की जा सकती है।

शिविर के आयोजन से पूर्व शिविरों के सफलता के लिए तथा उसके उद्देश्य एवं लक्ष्यों का पूर्ण ज्ञान करने की निम्नलिखित कारको / घटको पर ध्यान देना चाहिए -

Scanned by CamScanner

१- शिविर मे भाग लेने वालों की संख्या तथा पात्रता।

२- बजट बनाना शिविर का स्थान, भोजन, उपकरणों की प्राप्ति कार्यक्रम गतिविधियां, दैनिक कार्यक्रम, शिविर की अवधि, शिविर के यातायात के साधन शिविर क्षेत्र की योजना तम्बुओ को गाढ़ना या आवण्टन, दलो के समूह बनाना, स्वास्थ्य सफाई एवं प्रकाश व्यवस्था सुरक्षा शिविर के नियम, शिविर की समस्या अभिलेख।

1) बजट बनाना :—

(i) आय व्यय के लेखे-जोखे तथा पूर्व अनुमान से शिविर के आयोजन में पूर्ण अथवा आंशिक नियंत्रण रहता है।

(ii) शिविर कैम्प के अधिकारियो द्वारा शिविर पर नियंत्रण करने वाले कारको की पहचान कर योजना बनाना चाहिए जिसमें संख्या तथा किस प्रकार के कर्मचारी आदि होने चाहिए।

(iii) शिविर के कार्यक्रमो और गतिविधियो में आपसी तालमेल तथा समन्वय भी एक महत्वपूर्ण विषय होता है।

(iv) कार्यक्रम को वास्तविक स्वरूप प्रदान करने के लिए प्रबन्धन नियंत्रण के प्रयत्नो को इस प्रकार किया जाना चाहिए की कि शिविर में भाग लेने वालो को बाहर रहने के अवस्थाओ को अनुकूलन हो सके। और इस प्रकार की योजनाओ को ही अमल मे लाना चाहिए।

(v) नियंत्रण की सम्भावनाओ का विश्लेषण बजट

Rojgaralert.com

Scanned by CamScanner

बनाने के दौरान ही किया जाना चाहिए।

2) शिविर का स्थान :-

(i) शिविर आयोजन का स्थल सघन बस्ती से दूर होना चाहिए जिससे की शिविर मे भाग लेने वालो को स्वत्र एवं प्रर्याप्त स्त्रोतो को प्राप्त करने का अनुभव प्राप्त हो सके।

(ii) शिविर आयोजन स्थल मे प्रकृतिक के अध्ययन की प्रयाप्त सुविधाये उपलब्ध होना चाहिए। इसमें हस्थ शिल्प, तैराकी, यदि सम्भव हो सके तो नौका विहार की सुविधा होना चाहिए।

(iii) शिविर आयोजन स्थल में धूप तथा वर्षा से बचने के लिए प्रयाप्त साधन होने चाहिए या ढका होना चाहिए।

(iv) वहाँ पर प्राथमिक उपचार की तुरंत उपलब्धता प्रया मात्रा में होनी चाहिए।

(v) आपातकाल मे आग बुझने के प्रयाप्त साधन होने चाहिए।

(vi) वहाँ पर पीने का पानी प्रयाप्त मात्रा में होनी चाहिए

(vii) शिविर स्थान पर झाड- झनकड़ विषैले पौधो, मक्खी साँप, जंगली जानवर आदि का आसानी से प्रवेश ना हो सके।

(viii) निजि यातायात भी उस स्थान पर आसानी से प्रवेश

Rojgaaralert.com

Scanned by CamScanner

ना हो सके।

कार्यक्रम तथा गतिविधिया :— प्रकृति के अध्ययन को मालूम करना, Camp Craft, खेलकूद खाना बनाना तथा परोसना, ऊँचाई पर चढ़ना, समुदायी गायन, नाटक खेलना, प्रातः कालीन भ्रमण, वाद-विवाद तथा दृश्या अवलोकन आदि

दैनिक कार्यक्रम :— सुबह की प्रार्थना (activity) सुबह की शारीरिक गतिविधिया या कसरत, नाश्ता, शिविर निरक्षण विभिन्न गतिविधिया के लिए निर्देशन दोपहर का भोजन विश्राम तथा सुस्ताने का निर्देश चाय, खाली समय के खेल रात्रि भोज आदि।

शिविर के लिए यातायात की सुविधाएँ :— शिविर मे भाग लेने वाले संस्थान या घर से शिविर के आयोजन स्थल तक लाने ले जाने की समुचित व्यवस्था एक शिक्षक की देख रेख मे होना चाहिए। भाग लेने वालो की संख्या उपलब्ध साधनो की क्षमता से अधिक नही होना चाहिए शिविर मे भाग लेने वालो को यह जानकारी होनी चाहिए कि उन्हे किस यातायात के साधन से शिविर स्थान से संस्थान या घर से आना जाना है।

शिविर आयोजन स्थल की योजना :— शिविर आयोजन स्थल की योजना मे दर्शाये जाते हैं प्रत्येक समुह मे रहने के लिए स्थान पर पीने का पानी शौचालय कैम्पफायर का घेरा एकत्रीत होने का स्थान चिकित्सा

Rojgaralert.com

Scanned by CamScanner

केन्द्र खेल के मैदान, निर्देशन के स्थान आदि यह व्यवस्था शिविर में भाग लेने वाले सभी को विस्ती जानकारी देने में सहायक होते हैं।

स्वास्थ्य :– किसी भी शिविर में छात्रो या छात्राओ के भाग लेने से पूर्व उनकी चिकित्सा जाँच करने के सिफारिश किया जाना चाहिए छात्र संक्रामक एवं शारीरिक दुर्बलताओ से ग्रस्त न हो यदि छात्र किसी किसी सक्रमण बिमारी से ग्रसित है तो उसे शिविर मे जाने की इजाजत नही देना चाहिए। यदि कोई छात्र शिविर संचालन के समय बिमार पड जाते है। तो यदि ऐसा लगता है कि वह छात्र प्राथमिक उपचार से स्वास्थ्य नही हो पायेगा तो उसे पास के अस्पताल मे दाखिल कर देना चाहिए,

शिविर के उद्देश्य :–

(1) सामुहिक रूप से रहने की प्रवृत्ति विकसित :– शिविर मे विद्यार्थियों में अन्य विद्यार्थीयो के साथ रहने की लोकतान्त्रिक प्रवृत्ति पैदा होती है उनमें साथ-साथ रहने खाने पीने व सामुहिक रूप से कार्य करने की प्रवृत्ती विकसित होती है।

प्राकृतिक वातावरण से समाचित होना :– शिविर से छात्रो को प्राकृतिक वातावरण एवं नैसर्गिक साधनो के महत्व का ज्ञान प्राप्त होता है। छात्रो को प्राकृतिक नियमों का भी ज्ञान प्राप्त होता है विद्यार्थियों को प्रकृति से समाचित होना पड़ता है।

Scanned by CamScanner

उत्तम जीवन यापन में योगदान करना :— विद्यार्थियो को शिविर से बाह्य जीवन का आनन्द प्राप्त होता है तथा इसका प्रभाव उसके जीवन पर पड़ता है वह बाह्य जीवन महत्व को समझता है जब कभी कठीनाई या उब का अनुभव होता है यह प्राकृतिक सौन्दर्य उसमें नवीन स्फूर्ति एंव नव जीवन का संचार करता है।

नैतिक गुणों का विकास करना :— शिविर मे छात्रो के अन्दर उत्तरदायित्व नेतृत्व दलिय भावना एंव इमानदारी आदि श्रेष्ठ गुणो का विकास होता है। शिविर मे प्रत्येक सदस्य को अलग-अलग कार्य वितरित किये जाते है जैसे शिविर की सफाई पानी की व्यवस्था भोजन की व्यवस्था ईधन व्यवस्था मनोरंजन कार्यक्रम तथा प्रकाश व्यवस्था इत्यादि।

स्वास्थ्य निर्माण एंव योगदान करना :— शिविर मे विद्यार्थी स्वछन्द (चिन्ताविहीन) वातावरण में रहता है जहाँ स्वच्छ वायु की अधिकता तथा वातावरण की मनोहरता उसके स्वास्थ्य पर अनुकुल प्रभाव डालता है।

संरक्षित के मौलिक नियमो का ज्ञान करना :— शिविर अधिकाशत: ऐसे स्थानो पर रखा जाता है। जो कि इसके पूर्व एकान्त तथा विहग रहते है नूवीन स्थान होने के कारण उसकी विस्तृत जानकारी नही होती है इस स्थिति मे जंगली जानवरो से बचाव अग्नि से संरक्षण पानी मे डूबने से सुरक्षा एंव पहाड पर चढने से सुरक्षा जैसे कठिन कार्यो से संरक्षिता का ज्ञान प्राप्त होता है इससे छात्रो के अनुभव एंव ज्ञान मे वृद्धि होती है।

Scanned by CamScanner

शारिरीक शिक्षा के कौशलो में दक्षता प्राप्त करना:—

शिविर के अन्तर्गत विद्यार्थियों की शारीरिक शिक्षा के इस क्रियाकलापो में भाग लेते है शारीरिक शिक्षा की सदा उपस्थिथ का लाभ मिलता है तथा उन्हें गलतियों दूर करने तथा कौशल में प्रवीणता प्राप्त करने में सहाय होता है।

नेतृत्व का अर्थ:— नेतृत्व से अभिप्राय दूसरे के व्यवहार को प्रभावित करने की योग्यता है ताकि उनकी सामूहिक उद्देश्यों की प्राप्ती की दिशा में एक से आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

संस्कृत भाषा में नेता शब्द (लीडर सीप) "रिपतः या अर्थ अर्थात् जो दूसरो को ले जाने की क्षमता रखे वह नेता है तात्पर्य यह है कि जो व्यक्ति स्वयं आदर्श में होकर दूसरे शब्दो में नेतृत्व को मार्गदर्शन करने लक्ष्यों की प्राप्ती के लिए उन्हें प्रेरित करने आदि कार्यो को।

शारीरिक शिक्षा में किसी खेल को शुरू कार्य करने से लेकर उसे पूरा करने तक का कार्य भार एक लीडर के ऊपर आ जाता है।

नेतृत्व की परिभाषा:— Leadership

यंग के अनुसार:— "नेतृत्व प्रभुत्व का एक ऐसा प्रकार है जिसमें अनुयायी अधिक या कम इच्छा से किसी अन्य व्यक्ति (नेता) का निर्देशन एवं नियंत्रण स्वीकार करते है।

पुनीत तथा रेव के अनुसार:— नेतृत्व एक सत्ता है जो तब प्रकट होता है जब सत्ता

Scanned by CamScanner

प्रक्रिया में संलग्न होती है।

कूंज ओडोनेल के अनुसार :- "नेतृत्व एक सामान्य लक्ष्य की प्राप्ती के लिए लोगो को सहयोगी बनाने हेतु समझने की क्रिया है।

नेतृत्व की आवश्यकता :- खेलो मे नेतृत्व के लिए निम्न आवश्यकताए पडती है —

(1) खेलो मे समनवय
(2) नियोजन व्यवस्था तथा संलग्ता की सफलता (3) खेलो के स्तर में निरन्तर उन्नती के लिए (4) सामाजिक जागरूकता तथा कार्यारम्भ की प्रवृत्ति का विकास

(1) खेलो मे समन्वय :- खेलो मे सभी खिलाड़ियों स्वभाव भिन्न-2 होते है। कुछ प्रशिक्षक स्वभाव से कुशल एव मृदुल या परोपकारी होते है इसके विपरित कुछ कठोर एव मितभाषी होते है जिसका सीधा प्रभाव खिलाड़ि के खेलो पर पडता है इस प्रभाव को कम करने के लिए विद्यालय मे सामुहिक खेलो में सभी खेलो को एक सांचे मे ढालने तथा पारस्परिक एकता सदभावना बनाये रखने के लिए किसी एक योग्य नेता का आवश्यकता होती है।

2. नियोजन व्यवस्था तथा संलगनता की सफलता :-

शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र मे नवीन तथा उपयोगी खेलो व कार्यों के लिए योजना का निर्माण करना पडता है कार्यों या खेलो में सफलता प्राप्त करने के लिए संगठन आवश्यकता होती है खेलो मे कोई भी

Rojgarlet.com

Scanned by CamScanner

खिलाड़ि विरोध या उदासिनता न दिखाए इसके लिए सजग रहना पड़ता है इन सब कार्यों को उचित रूप से करने के लिए एक योग्य नेता की दक्षता, प्रवीणता तथा कुशलता की आवश्यकता पड़ती है। नियोजन तथा व्यवस्था के कार्यों में सभी खिलाड़ियों को नेता में विश्वास तथा आदर की भावना होनी चाहिए खेलों में विरोधी खिलाड़ियों वह नेता के व्यक्तित्व के प्रभाव से शीघ्र सहमत हो जाते है तथा खेलो के कुशल सन्चालन के लिए सुविधा प्रदान करता है।

③ खेलो के स्तर में निरन्तर उन्नति के लिए:- शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में नवीन अनुसंधानोंवनयी विरोधी का विधियों का महत्व है शारीरिक शिक्षा में नेता से यह आशा की जाती है कि वह प्राप्त खेल सामग्री से पूर्ण परिचित रहे तथा अपने साथ जुड़े अन्य खिलाड़ियों को भी इससे अवगत कराये उत्तम नेता अपने सहकर्मियों के शैक्षिक योग्यता में वृद्धि करने में रूचि करता है नेता की प्रेरणा से प्रशिक्षक योग्यता तथा कुशलता प्राप्त करने के लिए लालाहित होते है कुछ खेल कुद की क्रियाओं में तो कुछ विद्यालय के सांस्कृति कार्यक्रमो में प्रसिद्धि प्राप्त करते है ---- वास्तव में विशिष्ट क्षेत्रों की प्रकृतिक नेहव की विशेष प्रवृत्ति पर ही अवलम्बित होती है योग्य तथा कुशल नेता विद्यालय की सर्वांगिण विकास में सफल होता है।

④ सामाजिक जागरूपता तथा कार्यारम्भ प्रवृत्ति का विकास: समुह के खिलाड़ि पारास्परिक व्यवहारों में समाजिकता को अपनाये अर्थात जिन व्यवहारों को शिष्ट एवं सभ्य कहा जाता है उन्हें अपनाने का प्रयत्न करे इसके लिए एक कुशल नेता मार्गप्रदर्शन कर सकता है समाज के नियमो में बधकर तथा अनुशासन का पालन

करते हुए श्रेष्ठ नागरिको को गुणो को निरन्तर सिखाना सामाजिक जागरूपता कहलाती है। समाज नेतृत्व शक्ति द्वारा कार्यारम्भ मे पहल नही की जाती है समाज शक्ति रखते हुए भी सुप्त तथा मृत्यु के समान है।

नेतृत्व के प्रकार:— नेतृत्व की आवश्यकता महत्व प्रकृति एवं उससे सम्बन्धित विचारधाराओं का अध्ययन करने के पश्चात ऐसा प्रतित होता है कि नेतृत्व ऐसा कोई गुण नही जो हर समय परिस्थिति संगठन समस्या मे एक जैसा रहेगा।

कार्यों के आधार पर
(1) पद व परिस्थिति के आधार पर
(2) गतिशील के आधार पर

(1) कार्यों के आधार पर:— कार्यों के आधार पर नेता जो कार्य करता है वह संकेत के रूप मे राज्य के राज्यपाल या देश के राष्ट्रपति के रूप मे नेतृत्व का कार्य करता है सलाहकारी ~~का कार्य~~ भारत सरकार मे शिक्षा सलाहकार के तरह कार्य करता है किसी योजना का प्रस्तुत करना या योजना आयोग उपाअध्यक्ष द्वारा योजना प्रस्तुत करना है।

(2) पद व परिस्थिति के आधार पर:— पद व परिस्थिति के अन्तर्गत किसी पद पर आसिन व्यक्ति को नेता के रूप मे स्वीकार किया जाता है क्योंकि निर्देशन का अधिकार उसके पास सही होता है।

Scanned by CamScanner

③ गतिशील के आधार पर :- गतिशील नेतृत्व मे नेता समाज या स की परिस्थिति मे नेतृत्व मे अनुकुल परिवर्तन लाता है। नेतृ शैली के अनुसार नेतृत्व तीन प्रकार का होता है।

① सत्ता या आधिकारिक नेतृत्व
② प्रजातान्त्रिक या जनतान्त्रिक नेतृत्व
③ अहस्तक्षेपि नेतृत्व

① सत्ता या आधिकारिक नेतृत्व :- सत्ता वादि नेतृत्व वह है जिसमे निर्णय लेने तथा निति निर्धारित करने में सदस्यों के इच्छा का कोई महत्व नही होता है स्वंय नेता सभी महत्वपूर्ण निर्णय अपने इच्छ अनुसार लेता है इस प्रकार के नेतृत्व मे नेता व अनु के बीच का सम्बन्ध सत्तापूर्ण नेता का कार्य केवल निर्देशन और अनुवाइयो का कार्य उन निर्देशन के अनुसार अपने व्यवहार को संचालित करना होता है नेता संगठन सदस्यो की समस्याओं को कोई महत्व नही देता है इनका मुख्य सम्बन्ध कार्य से रहता है।

सत्तावादि या आधिकारी नेतृत्व का प्रवृति आक्रमक होती है वह दमनकारी साधन अपना कर संगठन मे कार्य कुशलता लाने का प्रयास करता है यदि किसी सदस्य द्वारा इस नेतृत्व के खिलाफ कोई बात कही जाती है तो उसे दण्डित किया जाता है इसमे पूर्ण वरचस नेता का होता है।

विभिन्न शोधो के परिणामो के स्वरूप आधिकारिक नेतृ के सम्बन्ध में निम्न मान्यताए आति है :-

Scanned by CamScanner

(1) औपचारिक नेतृत्व उन लोगो तक सीमित होता है जो किसी पद मे होने वाले करण के शक्ति मे है।

(2) इस नेतृत्व मे अधिकार तथा शक्ति विकेन्द्रित की जा सकती है परन्तु दायित्व विकेन्द्रित नही हो.

(3) अन्त मे दायित्व उस नेतृत्व का होता है जिसका सर्वोच्च अधिकार होता है।

(4) व्यक्ति उस पर्यावरण मे अपने को सुरक्षित महसुस करता है जिसमे पद परिस्थिति वाला नेता संगठन मे सुरक्षा करते है।

(5) उद्देश्यों का प्राप्ती तभी सम्भव है जब संगठन के सदस्य प्रस्थिति नेतृत्व के प्रति निष्ठावान हो।

(6) इसके मुल्यांकन का पुर्ण उत्तरदायित्व प्रस्थिति नेतृत्व का ही होता है।

(2) प्रजातान्त्रिक नेतृत्व :—

प्रजातान्त्रिक नेतृत्व इस युग का सबसे प्रचलित नेतृत्व है यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि हमारे देश मे प्रजातान्त्रिक प्रणाली है। इस प्रकार के नेतृत्व मे संगठन के सभी सदस्यों का कार्य मे कुछ ना कुछ योगदान होता है या अधिकार प्रदान होता है इसे सहभागी नेतृत्व या परामर्श योग्य नेतृत्व भी कहते है इसमे जब एक नेता निर्णय लेता है तो अपने अधिन कार्यरत लोगो से या व्यक्तियो कि राय को जान लेता है। कई संगठन मे यह सुझाव द्वारा अपने अध्यक्ष नेता को सुझाव भेज दिये जाते है नेता इन सुझावो के आधार पर निति बनाता है।

Rojgaaralert.com

Scanned by CamScanner

आयोजन, निति निर्धारण, कार्य विभाजन मे जन सहयोग प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। जन तान्त्रिक नेतृत्व परिस्थिति जन्य अनुरूप होता है परिस्थिति के बदलने के साथ-साथ नेतृत्व भी बदल जाता है परिस्थिति के लिए जिन कौशल क्षमताओ व साधनो की आवश्यकता होती है उसकी परिस्थिति मे वे उपयुक्त नही होते पाय। नेता समुह को मानदंड के अनुसार कार्य करता है।

(3) अहस्त क्षेपिय नेतृत्व :—

हस्त क्षेपिय नेतृत्व में नेतृत्व में नेता की स्वंय की योग्यता पर कोई भरोसा नही होता अत: वह स्वंय की कार्यविधि कार्यवाही में व्यस्त रखते है समुह के लोगो में किसी अन्य कहने से दूर रहता है इसमें नेता अपने अधिकांश कार्य अपने सहयोगियों पर डाल देता है परन्तु स्पष्ट निर्णय लेने मे समर्थ नही हो पाता है अत: एक ऐसा स्थिति आ जाती है संगठन नेतृत्व विहिन सा लगने लगता है ऐसे नेतृत्व में अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो जाता है।

Rojgaralert.com

Scanned by CamScanner